# प्रथम अध्याय

## भूषण का जीवन परिचय

## प्रथम अध्याय

### महाकवि भूषण का जीवन परिचय :

१. प्रस्तावना —

आजकल के आधुनिक जमाने में दिनप्रतिदिन अस्तंगत प्राचीन कविता का साहित्य सुगम होता जा रहा है, परंतु हिंदी के अधिकांश कवियों की सबसे अधिक कठिनाई यह है कि कवियों का जीवनवृत्त प्रामाणिक अन्त: साक्ष्य के अभाव में विवादग्रस्त है। पुरातन कवियों के जीवन , जन्मस्थान, जन्मकाल तथा काव्य-रचना के समय आदि का यथार्थ पता अभी तक नहीं चल सका है। हिंदी के वीर-काव्य के शिरोमणि महाकवि भूषण के संबंध में भी यही कठिनाई है। दुर्भाग्य की बात है कि उनकी संपूर्ण रचनाएँ अद्यावधि प्रकाश में नहीं आयीं। इसलिए उनके जीवनवृत्त को लेकर विद्वानों में बडा मतभेद है। इस विषय में जो कुछ सामग्री प्राप्त हुई है, वह किंवदंतियों, प्रामाणिक अन्वेषणों और विचारपूर्ण आलोचना - प्रत्यालोचनाओं से सार रूप में यहाँ दी गयी है।

२. जन्मकाल —

भूषण का जन्म कब हुआ, यह विषय सर्वाधिक विवादग्रस्त है। जन्मसंवत के बारे में भूषण की किसी भी रचना में कोयी उल्लेख नहीं है। शिवसिंह - सरोज में भूषण का जन्मकाल वि.सं.१७३८ ( ई.सन् १६८२ ) लिखा है। कई सज्जन भूषण को शिवाजी का समकालीन नहीं मानते। वे शिवाजी का पौत्र शाहू का दरबारी कवि मानते हैं। भूषण का जन्मकाल शिवसिंह - सरोज में लिखित मानने से भूषण शाहू के दरबारी कवि अवश्य कहे जायेंगे। लेकिन भूषण ने `शिवराज भूषण` का समाप्ति-काल संवत १७३० बताया है। यह समाप्तिकाल शिवसिंह सरोज में लिखित भूषण के जन्मकाल से भी ८ वर्ष

पहले का ठहरता है। `शिवराज - भूषण` इस ग्रंथ में सं.१७३० के बाद की एक भी घटना का उल्लेख नहीं है। यदि भूषण शिवाजी के समकालीन न होते तो वे शाहूजी को छोड़कर शिवाजी के यश का वर्णन नहीं करते। शिवाजी का यश-वर्णन करते समय शाहू का भी उल्लेख अवश्य करते। लेकिन `शिवराज-भूषण` इस ग्रंथ में सं.१७३० के बाद की घटनाओं का वर्णन नहीं है। इस ग्रंथ के प्रारंभ में ही भूषण ने शिवाजी के दरबार में जाने का उल्लेख किया है।

`शिवराज - भूषण` की समाप्ति तिथि को आधार मानकर हिंदी के समालोचकों ने भूषण के जन्म-संवत् का अनुमान किया है। शिवाजी महाराज के नाम लिखा हुआ संत तुकाराम का एक पत्र है। इस पत्र में तुकाराम ने शिवाजी के दरबारी कवियों को नमस्कार लिखते हुए भूषण का भी उल्लेख किया है —

पेशवे सुरनिस चिटणीस डबीर,
राजाला सुमंत सेनापति -
भूषण पंडितराय विद्या-धन,
वैद्यराजा नमन माझे आसो ।। १ ।।

शिवसिंह सेंगर भूषण का जन्म सं.१७३८ मानते हैं। सेंगरजी का यह मत मान लेने पर भूषण शिवाजी महाराज के निधन के एक वर्ष पश्चात जन्म लेते और शाहू महाराज के दरबारी कवि ठहरते हैं।

भूषण के जन्मकाल के संबंध में निश्चितरूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। भूषण का कवितिाकाल संवत् १७३० के लगभग ठहरता है। भूषण का जन्म उससे कम से कम ३५-४० बरस पहले हुआ होगा। भूषण का जन्मकाल मिश्रबंधु संवत् १६७१ मानते हैं। पं.रामचंद्र शुक्ल ने भूषण का जन्मकाल सं.१६७० माना है। यह ठीक नहीं जँचता क्योंकि यदि `शिवराज - भूषण` की समाप्ति पर भूषण की अवस्था ६० वर्ष के लगभग मानी जाय तो शाहू के राज्याभिषेक के समय भूषण ९४ वर्ष के ठहरते हैं। इसलिए भूषण का जन्मकाल सं.१६९० और १७०० के बीच मानना चाहिए।

३. भूषण का नाम —

महाकवि भूषण का असली नाम `भूषण` नहीं है। भूषण उनकी उपाधि है। यथा --

` कुल सुलंक चित्रकूटपति, साहस सील समुद्र।
कवि `भूषण` पदवी दई, हृदयराम सुत रुद्र।।`

इस संबंध में अनेक लोगों के विभिन्न मत हैं। श्री कुंवर महेंद्रपालसिंह का मत है कि भूषण का असली नाम मतिराम था, क्योंकि कहा जाता है कि मतिराम उनके भाई थे।

१) श्री नारायण प्रसादजी बेताब के अनुसार शायद भूषण का असली नाम कन्नौज था।

२) पं.भगीरथप्रसाद दीक्षित का मत है कि उनका असली नाम मतिराम था।

३) डॉ.उदयनारायणजी तिवारी के अनुसार ऊपर के विद्वानों ने इस संबंध में जो कुछ कहा है उसका आधार कल्पना है।

४) पं.विश्वनाथ प्रसादजी मिश्र ने भूषण का नाम घनश्याम बताया है।

५)राधामाधव विलास चंपू में बतलाये गये घनश्याम भूषण ही है। यह केवल कल्पनामात्र है, क्योंकि उत्तर देश से केवल भूषण ही शाहजी के यहाँ गये थे, इसका कोयी आधार नहीं है।

६) आ.विश्वनाथप्रसादजी मिश्र ने डॉ. किशोरीलाल गुप्त के किसी पत्र के आधार पर बताया है कि भूषण का नाम ब्रजभूषण था।

७) ब्रजकिशोर मिश्र ने भूषण मंजूषा में लिखा है कि भूषण का वास्तविक नाम भूषण ही हो और हृदयरामने इन्हें कोरे भूषण से ` कवि-भूषण ` बना दिया हो।

भूषण के इन सब नामों से उनका मूल नाम भूषण ही अधिक प्रामाणिक और अन्त:साक्ष्य से समर्थित प्रतीत होता है, क्योंकि कवि वंशवर्णन में भूषण ने स्वयं लिखा है —

देसनि देसनि ते गुनी, आवत जाँचन ताहि ।
तिनमें आयो एक कवि, भूषण कहिये जाहि ।। २५ ।

इसका अर्थ है कि रायगढ में शिवाजी के यहाँ अनेक देशों के गुणी लोग, कलाविद पुरस्कार प्राप्ति की कामना से आते थे, उनमें एक कवि आया, जिसे भूषण कहते थे। अर्थात भूषण कवि का नाम था। इसी भूषण को हृदयराम सुत रुद्र ने 'कवि भूषण' की पदवी दी।

अत: अन्त:साक्ष्य और परंपरा से कवि भूषण का मूल नाम भूषण्ण मानना अधिक समीचीन लगता है।

४. भूषण का जन्मस्थान —

कवि भूषण का जन्म कानपुर के समीप तिकवाँपुर ग्राम में हुआ था। यह स्थान कानपुर जिले में हमीरपुर रोड पर स्थित, घाटमपुर तहसील में मौजा अकबरपुर - बीरबल से दो मील दूर है। भूषण ने इस संबंध में लिखा है —

' बसत त्रिविक्रमपुर सदा । [२]

दीक्षितजी के अनुसार भूषण त्रिविक्रमपुर में आकर बस गये थे। असल में वे बनपुर के निवासी थे।

' शिवराज-भूषण' में कवि भूषण ने लिखा है —

' विप्रज कनोज कुल कस्यपी, रतनाकर सुत धीर ।
बसत त्रिविक्रमपुर सदा, तरनि तनूजा तीर ।। २६ ।। '

इससे यह सिध्द होता है कि भूषण हमेशा त्रिविक्रमपुर में ही रहते थे। यही त्रिविक्रमपुर भूषण का जन्मस्थान और निवासस्थान भी था। त्रिविक्रमपुर को ही भूषण का जन्मस्थान मानना चाहिए, क्योंकि अन्त: साक्ष्य से समर्थित होने के कारण त्रिविक्रमपुर को ही प्रामाणिक मानना उचित है।

५ वंश परिचय :

शिवराज भूषण में कवि वंश वर्णन में संकलित विवरणों से ऐसा ज्ञात होता है कि कवि भूषण कान्यकुब्ज ब्राह्मण है। उनका कश्यप गोत्र है। उनके पिता का नाम रतिनाथ था। वे यमुना तट पर स्थित त्रिविक्रमपुर में सदैव निवास करते थे। इस ग्राम में बीरबल जैसे कवि, वीर और शासक का जन्म हुआ था। यहाँ विहारेश्वर विश्वेश्वर का मंदिर है।[३]

भूषण कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे, यह एक प्रकार से निर्विवाद है। रस-चंद्रिका के लेखक सुकवि बिहारीलाल अपना वंश-परिचय इस प्रकार देते हैं —

भूषण चिंतामणि तहाँ कवि भूषण मतिराम।
नृप हमीद सनमान ते कीन्हे निज निज धाम॥
हैं पंती मतिराम के सुकवि बिहारीलाल।
जगन्नाथ नाती विदित सीतल सुत सुभ चाल॥
कस्यप-बंस कनोजिया बिदित त्रिपाठी गोत।
कवि राजन के वृंद में कोविद सुमति उदोत॥[४]

ऊपर के छंद में कवि को कनोजिया बतलाया गया है। श्री शिवसिंह सेंगर तथा मौलाना गुलामअली आजाद भी उन्हें कान्यकुब्ज ही मानते हैं।

६. भूषण का भ्रातृत्व —

भूषण को चिंतामणि, मतिराम और नीलकण्ठ (जटाशंकर) ये तीन भाई थे।[५] कुछ लोग इन चारों को भाई-भाई मानते हैं, तो कुछ लोग चिंतामणि, मतिराम और भूषण इन तीनों को ही भाई-भाई मानते हैं लेकिन जटाशंकर को इन कवियों का भाई कुछ लोग नहीं मानते।

श्री गोवर्धनदास लक्ष्मीदास ने इन चारों को भाई-भाई मानकर उनके जन्म की एक किंवदंती का उल्लेख किया है —

कानपुर जिले की घाटमपुर तहसील में एक तिकवाँपुर गाँव है। उस गाँव में पं.रत्नाकर त्रिपाठी नाम के कश्यप गोत्रीय एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण रहते थे। रत्नाकरजी `बन झुँइया` देवी के बड़े भक्त थे। रत्नाकरजी नित्य चंडीपाठ किया करते थे। देवी की कृपा से उन्हें चार पुत्र उत्पन्न हुए। ये चारों भाई सुकवि थे - (१) चिंतामणि (२) भूषण (३) मतिराम (४) नीलकण्ठ (जटाशंकर)। इनमें से पहले तीन पुत्रों ने काव्य का अध्ययन किया और जटाशंकर साधुसेवा करने लगे। भूषण ने वीररस का विशेष अध्ययन किया। [६]

इन चारों भाइयों ने पर्याप्त काव्यग्रंथ लिखे,लेकिन एक ने भी अपने ग्रंथ में एक दूसरे का अथवा पारस्परिक भ्रातृत्व का उल्लेख नहीं किया है। कई जगह चिंतामणि,मतिराम और भूषण के भाई होने की बात पायी जाती है। गुलाम अली आजाद के `तजकिर: सर्वे आजाद` में मतिराम और भूषण चिंतामणि के ही भाई थे ऐसा लिखा है।

मतिराम के वंशधर कविवर बिहारीलाल ने भी चिंतामणि,भूषण और मतिराम के भ्रातृत्व का उल्लेख स्पष्टत: नहीं किया है। महाराष्ट्र के लेखक चिटणीस ने भी `बखर` में चिंतामणि और भूषण को भाई-भाई माना है। अधिक लोगों का मत है कि केवल तीन ही भाई-भाई है, और जटाशंकर उनके भाई नहीं है। लेकिन `मनोहर प्रकाश` तथा `शिवसिंह सरोज` आदि ग्रंथों में जटाशंकर को भी उनका भाई माना गया है।

शिवप्रताप की प्रस्तावना में ही श्री दुर्गाप्रसाद आशाराम तिवारी ने चिंतामणि,मतिराम,भूषण और जटाशंकर के भ्रातृत्व का उल्लेख किया है। मिश्र बंधु और पं.विश्वनाथ प्रसाद जी मिश्र भी इन चारों को भाई-भाई मानते है। लेकिन स्वयं मिश्रबंधुओं के ही मत से जटाशंकर को भूषण का भाई मानना संदिग्ध है। जटाशंकर और भूषण के बारे में जब तक अन्त:साक्ष्य अथवा पुष्ट प्रमाण नहीं मिल सकता,तब तक इनको भाई-भाई मानना उचित नहीं लगता।

७. भूषण का गृहत्याग —

कवि भूषण युवावस्था के प्रारंभ तक बिलकुल निकम्मे थे। उनके भाई चिंतामणि दिल्ली सम्राट से धन कमाकर घर का खर्चा चलाते थे। इसलिए चिंतामणि के स्त्री को बहुत अभिमान था। स्त्रियों को अपने पति की कमाई का बडा गर्व होता है। भूषण के गृहत्याग करके आश्रयदाता की खोज में जाने की दो किंवदंतियाँ बतायी जाती हैं। इन दोनों किंवदंतियों का संबंध उनकी भाभी से है। किंवदंतियाँ इसप्रकार है —

१) हाथी विषयक किंवदंती

२) नमक विषयक किंवदंती

(१) हाथी विषयक किंवदंती —

एक दिन भूषण की पत्नी गणेशचतुर्थी को गणेशजी की पूजा करने के लिए नहीं गयी। उस वक्त उनकी जेठानी ने व्यंग्य से कहा कि पति से कहकर जीवित गणेश मँगा लो। इसप्रकार हाथीविषयक किंवदंती है।[७]

(२) नमक विषयक किंवदंती —

एक दिन भूषण भोजन करने बैठे तो संयोग से दाल में नमक कम था। भूषण ने अपनी भाभी से नमक माँगा। उस वक्त भाभी ने गर्व से ही कहा —' कमा के लाना पडता तो बहुआ जान पडता है!' यह व्यंग्योक्ति भूषण सह न सके। उन्होंने मुख का कौर उगलते हुए कहा — ' अब जब नमक लेकर आयेंगे तभी यहाँ भोजन करेंगे।' ऐसा कहकर भूषण घर से बाहर चल पडे। भूषण ने उसी समय कवित्व शक्ति की प्राप्ति के लिए प्रयत्न किया।[८]

इस प्रकार भूषण के गृहत्याग के बारे में दो किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। और उनका संबंध भूषण की भाभी से है। भूषण के पारिवारिक व्यंग्यों ने उनके स्वाभिमान को जागृत किया है। नमक की खोज में चित्रकूटपति हृदयराम सुलंकी से

आगरा वे शिवाजी के पास पहुँचे। शिवाजी व्दारा सम्मानित होने पर उन्होंने एक लाख रुपये का नमक और कई हाथी इन व्यंग्यों को चरितार्थ करने के लिए अपनी मामी के पास भेजे।

८. देवी कृपा और कवित्व का वरदान —

जब कवि भूषण घर से बाहर निकल पडे, उसी समय उन्होंने कवित्व शक्ति की प्राप्ति के लिए प्रयत्न किया। कहते हैं कि उन्होंने अपनी जिव्हा काटकर श्री जगदंबाजी पर चढा दी थी। इसके बाद उनकी सोती हुई कवित्व शक्ति विकसित हो उठी और वे थोडे ही दिनों में एकदम भारी कविश्वर हो गये थे।

इस किंवदंती से केवल इतना ही सिध्द किया जा सकता है कि भूषण की वाणी के पीछे देवी शक्ति का हाथ था, और भूषण को शक्ति का वरदान प्राप्त था।

९. भूषण की यात्राएँ —

अन्त: साक्ष्य के अनुसार भूषण मोरंग, कुमाऊँ, श्रीनगर, रीवाँ, आमेर, जोधपुर, चित्तौड, गोलकुंडा, बीजापुर, दिल्ली गये थे। औरंगजेब के दरबार में वे टिक न सके। अंत में शिवाजी का आश्रय पाकर ही निहाल हुए। शिवाजी का आश्रय मिलने पर उन्होंने औरों की परवाह छोड दी —

भूषण श्री सिवराज ही माँगिये,
एक मही पर दानि महा है।
माँगन औरन के दरबार गयो तो कहा,
न गयो तो कहा है।। २५८ ।।[९]

१० भूषण के आश्रयदाता —

श्री. मिश्रबंधुओं ने शिवाजी के अतिरिक्त भूषण के आश्रयदाताओं के नाम इस प्रकार दिये हैं ——

| | | |
|---|---|---|
| १. | हृदयराम सुत रुद्र सुरकी महोबा निवासी | - सन १६६६ ई. |
| २. | कुमाऊँ नरेश ज्ञानचंद | - सन् १७००-१७०८ ई. |
| ३. | गढवाल नरेश फतेहशाह | - सन् १६८४-१७१६ ई. |
| ४. | साहूजी भोंसला | - सन् १७०८-१७४८ ई. |
| ५. | बाजीराव पेशवा | - सन् १७१३-१७३५ ई. |
| ६. | महाराजा अवधूत सिंह | - सन् १७००-१७५५ ई. |
| ७. | सवाई जयसिंह जयपुर नरेश | - सन् १७०८-१७४३ ई. |
| ८. | चिंतामणि (चिमनाजी ) | - सन् १७७३ ई. |
| ९. | महाराजा छत्रसाल पन्नानरेश | - सन् १६७१-१७३२ ई. |
| १०. | राव बुध्दसिंह हाडा बूँदी नरेश | - सन् १७०७-१७४८ ई. |
| ११. | दाराशाह | - सन् १६५९ ई.तक |
| १२. | भगवंतराय खींची असोरथ नरेश | - सन् १६४३-१७४० ई. |

उक्त व्यक्तियों के अतिरिक्त श्री भागीरथ प्रसादजी दीक्षित ने मैंहू नरेश अनिरुध्दसिंह पेारच ( सन १७१३ ई.के लगभग ) और श्री चित्रकूटपति वसंतराय सुरकी ( सन १७२३ ई.के लगभग ) को भी भूषण के आश्रयदाताओं में माना है।[१०]

इन सभी व्यक्तियों में चित्रकूटपति हृदयराम सुत रुद्रशाह भूषण के प्रारंभिक आश्रयदाता थे। श्री.छत्रपति शिवाजी उनके प्रधान और छत्रसाल बुंदेला व साहूजी छत्रपति उनके उपप्रधान आश्रयदाता थे।

## ११. कवि भूषण की उपाधि —

जब कवि भूषण की सोयी हुवी कवित्व शक्ति विकसित हो उठी, और वे कवि बन गये, उस वक्त कविता द्वारा धनोपार्जन का एक ही मार्ग राजाश्रय था। इसलिए भूषण ने चित्रकूटाधिपति सोलंकी हृदयराम सुत रुद्र का आश्रय ग्रहण किया। उस समय कवि लोग अपने काव्य में शृंगार रस को ही स्थान देते थे। कवि शृंगार को ही काव्य की आत्मा मानते थे। लेकिन भूषण ने शृंगार-कविता धारा

को त्यागकर वीर रस की चमत्कारिणी कविता का प्रारंभ किया ।

भूषण की वीर रस की कविता सुनकर तथा वीर कविताओं से प्रसन्न होकर ` हृदयराम सुत रुद्र ` ने भूषण को ` कवि भूषण ` की उपाधि दी ।[११] कई लोग हृदयराम सुत रुद्र का अर्थ रुद्र का पुत्र हृदयराम करते हैं । उनके अनुसार चित्रकूटाधिपति रुद्रशाह के पुत्र हृदयराम है । इन्हीं हृदयराम ने कवि 'भूषण' की उपाधि भूषण को दी है ।

मिश्रबंधुओं के अनुसार रुद्रराम सोलंकी ने भूषण को सन १६६६ के लगभग कवि भूषण की उपाधि दी । श्री.दुर्गाप्रसाद आशाराम तिवारी, प्रो. अनंत, श्री.हरदयालुसिंह आदि लेखक रुद्रशाह सोलंकी को ही भूषण का प्रथम आश्रयदाता और उपाधि दाता मानते हैं । लेकिन अभी तक इस विषय में निश्चित रुप से कुछ नहीं कहा जा सकता ।

१२. भूषण का समय —

डॉ.भगवानदास तिवारी के अनुसार भूषण का जन्म सन १६४० ई.में हुआ और स्वर्गारोहण सन १७३५ ई.में हुआ ।[१२] शिवसिंह सरोज में शिवसिंह सेंगर ने भूषण का जन्मकाल सं.१७३८ लिखा है । श्री.भगीरथ प्रसादजी दीक्षित ने भूषण का जन्मकाल सं.१७३९ लिखा है । यह समय ` शिवराज-भूषण ` के रचनाकाल से आगे ९ साल जाता है । अत: भगीरथ प्रसाद दीक्षित का आधार गलत है । श्री.रामबहोरी शुक्ल व डॉ.भगीरथ प्रसाद मिश्र, डॉ.रामअवध द्विवेदी, डॉ.त्रिभुवनसिंह व श्री.दु.आ.तिवारी भूषण का जीवनकाल सन १६१३ से १७१५ ई. तक मानते हैं ।

श्री.गो.स.सरदेसाई ने भूषण का समय सन १६१४ से १७१६ तक लिखा है । डॉ.गणपतिचंद्र कहते हैं - भूषण सन १६२५ से सन १६८० तक जीवित थे । लाला भगवान दीन के अनुसार भूषण सन १६३५ से १७१२ तक वर्तमान थे ।

पुष्ट प्रमाण के अभाव में भूषण का जीवनकाल अनिश्चित है। भूषण के बारे में मिश्रबंधुओं ने लिखा है - ' जब शिवाजी दक्षिण के अनेक दुर्ग जीतकर रायगढ में राजधानी स्थित कर चुके थे तब भूषण शिवाजी के दरबार में गये थे। इस समय भूषणजी प्राय: २७ वर्ष के थे। [१३]

१३. भूषण का व्यक्तित्व —

भूषण संस्कृत, हिंदी और फारसी के बडे विद्वान थे। भूषण के देशाटण के कारण वे अनेक प्रांतीय बोलियाँ भी जानते थे। [१४] प्रारंभ में उनकी काव्यप्रतिभा शृंगारपरक हुई, लेकिन तत्कालही भूषण को औरंगजेब के धार्मिक अत्याचारों ने स्वजाति, स्वधर्म और स्वातंत्र्यप्रेम की ओर प्रवृत्त कर दिया। भूषण ने हिंदुत्व के पतन को रोकने में प्रयत्नशील शिवाजी और छत्रसाल की सुकीर्ति का गान करने में प्रतिभा और कवित्वशक्ति का सदुपयोग किया है। भूषण प्रतिष्ठित वीर थे, इसलिए उनकी रचनाएँ यथार्थ में वीर-रस पूर्ण और ओजपूर्ण हैं। भूषण ने सोती हिंदु जनता को जागृत किया। उन्होंने अत्याचार का विरोध और अधिकार प्राप्ति के लिए हिंदु जनता को उत्तेजित किया है।

भूषण रीतिकालीन-धारा के कवि होते हुए भी वीर रस के कवियों में अग्रणी हैं। अपने आश्रयदाताओं से उन्होंने अतुल धन प्राप्त किया है।

भूषण को रुद्रशाह सोलंकी ने 'कवि भूषण' की उपाधि दी, और छत्रपति शिवाजी ने उन्हें 'कवि-कुल-सचिव' पद पर प्रतिष्ठित किया। भूषण ने 'शिवराज-भूषण' इस ग्रंथ में शिवचरित्र को अमरता प्रदान की है। उन्होंने इस ग्रंथ में शिवकालीन युग जीवन और इतिहास को छंद बध्द किया है। भूषण में स्पष्टवादिता, निर्भिकता, साहस और स्वामिभक्ति आदि गुण थे। उन्होंने विलासिता के पंक में फँसी हुई हिंदु जाति को शिवाजी और छत्रसाल के प्रेरक आदर्श देकर राष्ट्र-प्रेम और स्वातंत्र्य प्राप्ति का संदेश दिया है। [१५]

भूषण ने अपने युग में केवल धन, पद या मान ही नहीं, बल्कि प्रतिष्ठा

और हिंदी-साहित्य के इतिहास में अमर स्थान पाया है। हिंदी के नवरत्नों में भूषण की गणना महान कवि के रूप में की जाती है। वीर-रसात्मक छंदों के सृजन की दृष्टि से भूषण वीर शिरोमणि हैं।[१६]

भूषण की पुकार भारत-समाज की पुकार थी। इन्होंने अन्याय, अत्याचार एवम् क्रूरता के प्रतिपक्ष में न्याय, सदाचार और करुणा का साथ दिया था। भूषण ने शिवाजी और छत्रसाल की प्रशंसा इसलिए की कि समाज की पुकार पर उन्हें आकृष्ट करने के लिए पाशविकता का प्रतिशोध लेने के लिए और धर्म की ध्वजा ऊँची उठाने के लिए की थी।[१७]

१४ भूषण का कृतित्व --

भूषण ने शिवाजी के जातीय जीवन की घटनाओं पर ही कुछ लिखा है। उनके यश - वर्णन का ही चित्र खींचा है। भूषण ने शिवाजी के वैयक्तिक जीवन के विषय में एक भी छंद नहीं लिखा है। भूषण के जीवन-वृत्त की तरह उनकी रचनाओं के बारे में पर्याप्त मतभेद है; क्योंकि भूषण की संपूर्ण रचनाएँ आज तक प्रकाश में नहीं आयी हैं। उनकी कुछ रचनाएँ अप्राप्य हैं।

सर जॉर्ज ग्रियर्सन और श्री शिवसिंह सेंगर ने भूषण के चार ग्रंथों का उल्लेख किया है। `शिवराज-भूषण,`` भूषण-हजारा`, `भूषण उल्लास`, और दूषण उल्लास ` का उल्लेख कर कालिदास हजारा में संकलित भूषण के सत्तर छंदों का उल्लेख किया है। आ.रामचंद्र शुक्ल ` शिवराज भूषण`, `शिवा-बावनी` और` छत्रसाल - दशक` ये ग्रंथ भूषण के उपलब्ध ग्रंथ मानते हैं। `भूषण उल्लास`, `दूषण उल्लास` और` भूषण हजारा` ये अप्राप्य ग्रंथ है। मिश्रबंधु देवदत्त शास्त्री, रामनरेश त्रिपाठी, बाबू ब्रजरत्नदासजी, विश्वनाथ प्रसादजी मिश्र ने स्वसंपादित भूषण ग्रंथावलियाँ प्रकाशित कराई हैं। मिश्रबंधुओं ने कलकत्ता से प्रकाशित एक भूषणग्रंथावली की सूचना भी दी है।

## शिवराज-भूषण --

भूषण के नाम से कही जानेवाली रचनाओं में यही एकमात्र उपलब्ध पूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रंथ के नाम से ही सिध्द होता है कि इसमें शिवाजी का चरित्र लिखा है और यह अलंकारमय ग्रंथ है। इसप्रकार `शिवराज-भूषण` इस ग्रंथ का नाम इसके नायक, रचयिता और विषय सभी का द्योतक है। भूषण ने इस ग्रंथ में अलंकारों के लक्षण दोहों में दिये हैं। और अलंकारों के उदाहरण सवैया और कवित्त आदि विविध छंदों में दिये हैं। इस ग्रंथ में भूषण ने संवत् १७१३ से लेकर १७३० तक की घटनाओं का उल्लेख किया है। इसमें शिवाजी के जीवन की प्रमुख राजनीतिक घटनाओं तथा विजयों, उनके प्रभुत्व, आतंक, यश तथा दान आदि का वर्णन किया है।

`शिवराज-भूषण` का मूल विषय शिव-चरित्रांकन है, और इस शिवचरित्रांकन के लिए रचे गये छंदों को अलंकारों के उदाहरणों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह ग्रंथ अलंकारमय होकर भी उसमें अलंकार निरूपण साध्य नहीं है। अलंकार निरूपण शिवराज-भूषण का गौण उद्देश्य है। इस ग्रंथ में भूषण ने अपने आश्रयदाता के चरित्र के साथ युग-जीवन और समसामयिक इतिहास को काव्यबध्द किया है। इस ग्रंथ में भूषण ने १०० अर्थालंकार और ५ शब्दालंकार दिये गये हैं।

भूषण का उद्देश्य तो सिर्फ शिवाजी के यश को अजर-अमर करना था। भूषण ने शिवाजी का उज्ज्वल चरित्र अलंकृत करने के लिए ऐतिहासिक घटनाओं तथा अलंकारों को साधन बनाया है। अलंकारमय काव्यरचना की लालसा पूरी करने के लिए भूषण ने शिव-चरित्र पर `शिवराज - भूषण` इस अलंकारमय ग्रंथ की निर्मिति की है। इस पर कवि स्वयं कहते हैं ---

`शिव-चरित्र लखि यों भयो, कवि भूषन के चित्त।
भाँति-भाँति भूषननि सों, भूषित करौं कवित्त ।। [१८]

शिवा-बावनी --

शिवराज भूषण के बाद `शिवा-बावनी` भूषण के शिवाजी संबंधी ५२ स्फुट पद्यों का संग्रह मात्र है। `शिवा-बावनी` के संबंध में यह किंवदंती प्रचलित है कि जब भूषण और शिवाजी की प्रथम भेंट हुई, तब भूषण ने छद्मवेशी शिवाजी को वीर रसात्मक बावन छंद सुनाये थे। येही छंद `शिवा-बावनी` में संग्रहीत किये गये है।[१९]

`शिवा-बावनी` में शिवाजी की युध्दवीरता, धर्मवीरता, औरंगजेब और शिवाजी की तुलना तथा शिवाजी को विजयी सिद्ध करने के लिए औरंगजेब की असफलता का वर्णन किया है, और अगर शिवाजी न होते तो हिंदु लोगों की दशा कैसी होती, ऐसे विषयों पर छंद शिवा-बावनी में संग्रहीत है। इस ग्रंथ में भूषण ने वीर, रौद्र, भयानक रस के अनेक उदाहरण दिए हैं।

छत्रसाल-दशक --

`छत्रसाल-दशक` यह ग्रंथ महाराज छत्रसाल पर लिखे हुए छंदों का संकलन मात्र है। कहा जाता है कि भूषण जब इन महाराज के यहाँ आकर ठहरते थे, तब जो छंद लिखते थे, उन्हीं का संकलन इस छोटे से ग्रंथ में किया गया है। इस ग्रंथ में छत्रसाल बुंदेला के शौर्य और औदार्य से संबंधित दस छंदों का संकलन होने के कारण इसे `छत्रसाल-दशक` कहा जाता है। इसमें छत्रसाल बुंदेला के शौर्य, औदार्य, आतंक, शस्त्रास्त्र-संचालन-कौशल और उनके जीवन से संबंधित ऐतिहासिक घटना-प्रसंगों का बडा सजीव वर्णन मिलता है। इन छंदों में वीर और रौद्र रसों की व्यंजना प्रमुख है।

फुटकर छंद - संग्रह --

भूषण के `शिवराज-भूषण`, `शिवा -बावनी`, `छत्रसाल-दशक` इन ग्रंथों के अतिरिक्त कुछ और स्फुट पद्य भी मिलते हैं। उनके छंदों में भाव-सौंदर्य कल्पना-सौंदर्य, और ध्येय-सौंदर्य का वर्णन है। अब तक प्राप्त पद्यों की संख्या ६५ के

लगभग हैं। इसमें दस छंद शृंगार - रस के हैं, और ३६ छंद शिवाजी विषयक हैं। और शेष सभी छंद शाहूजी और अन्य राजाओं के वर्णन के हैं।

संदेप में भूषण का `शिवराज-भूषण` इस ग्रंथ के अतिरिक्त अन्य कोई भी दूसरा ग्रंथ, उपलब्ध नहीं है। `शिवा-बावनी` और `छत्रसाल-दशक` यह संकलित ग्रंथ हैं यह दो नाम भूषण के संकलनों के संपादकों व्दारा दिये गये नाम हैं। `शिवराज भूषण` इस ग्रंथ में भूषण ने शिवाजी का चरित्र अलंकारों के उदाहरणों से स्पष्ट किया है। इसमें भूषण का उद्देश्य यह है कि शिवाजी का यश और कीर्ति को फैलाना। और अलंकार निरूपण केवल साधन मात्र है।

`शिवा-बावनी` के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि भूषण व्दारा शिवाजी को प्रथम भेंट के समय सुनाये गये ५२ छंदों का संकलन `शिवा-बावनी` है। इसमें शिवाजी की युध्दवीरता, धर्मवीरता, औरंगजेब और शिवाजी की तुलना, शौर्य, औदार्य, आतंक तथा गौरव के बड़े प्रभावशाली वर्णन हैं। इस ग्रंथ में वीर रस प्रधान रस है।

`छत्रसाल-दशक` में पन्ना नरेश छत्रसाल बुंदेला के शौर्य और औदार्य से संबंधित दस छंद हैं। `शिवा-बावनी` और `छत्रसाल दशक` यह दो ग्रंथ छंदों का संकलन होने पर भी लोग इसे भूषण की स्वतंत्र रचना मानते हैं।

## निष्कर्ष

महाकवि भूषण के जन्मकाल के संबंध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि भूषण के जन्मकाल के बारे में प्रबल प्रमाण उपस्थित नहीं है। महाकवि भूषण का असली नाम `भूषण` नहीं है, कवि भूषण उनकी उपाधि है। कविवंश वर्णन में भूषण ने स्वयं लिखा है ---

`देसन देसनि ते गुनी, आवत जाँचन ताहि।
तिनमें आयो एक कवि, भूषण कहिये जाहि।। २५।।`

लेकिन यह पद भूषण ने शिवाजी से मिलने के बाद लिखा है। इसके पूर्व जब भूषण सबसे पहले चित्रकूटाधिपति हृदयराम सुत रुद्रशाह के दरबार में गये थे, उस वक्त उनकी कविता सुनकर रुद्रशाह ने भूषण को `कवि-भूषण` की उपाधि दी है। भूषण का रुद्रशाह के बाद का आश्रयदाता छ.शिवाजी है।

भूषण का जन्मस्थान और निवास स्थान त्रिविक्रमपुर था। यह स्थान कानपुर जिले में हमीरपुर रोड पर स्थित घाटमपुर तहसील में है।

भूषण कश्यप गोत्रिय कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। उनके पिता का नाम रतिनाथ है।

भूषण के चिंतामणि और मतिराम दो ही भाई हैं, लेकिन जटाशंकर को इनका भाई मानना गलत है। इस बारे में अन्त: साक्ष्य अथवा पुष्ट प्रमाण नहीं मिल सकता, इसलिए जटाशंकर को भूषण का भाई मानना उचित नहीं लगता।

भूषण के गृहत्याग के बारे में जो दो किंवदंतियाँ प्रचलित हैं, उनका संबंध उनकी मामी से है। भूषण के पारिवारिक व्यंग्योंने उनके स्वाभिमान को जाग्रत किया है। भूषण के जीवन पर विचार करने से मालुम होता है कि वे प्रारंभ में निरुद्यमी थे। उनकी मामी के ताने ने उनके सुप्त स्वाभिमान आत्मगौरव और कवित्व को जाग्रत कर दिया है। मामी के ताने से उन्होंने गृहत्याग किया, और वे बडे उद्योगी, महत्वाकांक्षी, साधक प्रवृत्ति के शब्दशिल्पी कवि हुए। कवित्व शक्ति के लिए भूषण ने अपनी जिह्वा काटकर श्री.जगदंबाजी पर चढा दी

थी । इससे इतना ही सिध्द किया जा सकता है कि भूषण की वाणी के पिछे दैवी शक्ति का हाथ या शक्ति का वरदान था ।

भूषण ने अनेक देशों की यात्रा की थी । वे चित्रकूटपति हृदयराम सुलंकी से दिल्ली औरंगजेब के दरबार में गये । औरंगजेब के दरबार में वे टिक न सके । दिल्ली से वे रायगढ में शिवाजी के पास गये और निश्चिंत हो गये । शिवाजी के पास रहते उन्होंने औरोंकी परवाह नहीं की ।

सभी आश्रयदाताओं में चित्रकूटपति हृदयराम सुत रुद्रशाह भूषण के प्रारंभिक आश्रयदाता थे । श्री.छत्रपति शिवाजी भूषण के प्रधान आश्रयदाता और छत्रसाल बुंदेला और साहूजी छत्रपति उनके उपप्रधान आश्रयदाता थे ।

भूषण जब रायगढ में शिवाजी से प्रथम बार मिले ( सन १६६७ ), उस वक्त उनकी आयु २७ वर्ष थी । इससे यह स्पष्ट होता है कि भूषण का जन्म सन १६४० और उनका निधन सन १७३५ ई. में माना जाता है । भूषण ने बहुत लंबी उम्र की आयु पायी है ।

भूषण के देशाटण के कारण वे अनेक प्रांतीय बोलियाँ जानते थे । भूषण रीतिकालीन कवि होते हुए भी उन्होंने वीर रस की कविता का सृजन किया है । भूषण को हिंदु जाति,स्वधर्म और स्वातंत्र्य-प्रेम का अभिमान है । वे स्वयं प्रतिष्ठित वीर होने के कारण उन्होंने वीर काव्य लिखा है । वीर कवियों में भूषण का स्थान सर्वोच्च है । छत्रपति शिवाजी ने भूषण को 'कवि कुल सचिव' पद पर प्रतिष्ठित किया था । भूषण ने 'शिवराज-भूषण' में शिवचरित्र और उस कालीन युगजीवन और इतिहास को अमरता प्रदान की है । भूषण ने हिंदु जाति को राष्ट्रप्रेम और स्वातंत्र्य प्राप्ति का संदेश दिया है । इन गुणों से सिध्द होता है कि भूषण एक जातीय राष्ट्रीय कवि है ।

छत्रपति शिवाजी के उत्थान और महत्कार्य संपादन करने में जो सहायता उनकी माता जीजाबाई, दादाजी कोंडदेव और महात्मा रामदास ने की,वही सहायता महाकवि भूषण ने भी की है । सचमुच भूषण शिवाजी के कवि कुल

सचिव थे तो शिवाजी कवि भूषण के भूषण थे। भूषण की गणना हिंदी के नवरत्नों में की जाती है। वीर काव्य में वे हिंदी के महानतम कवियों में से एक हैं।

'शिवराज-भूषण, शिवा-बावनी और छत्रसाल-दशक' ये तीनों काव्य भूषण की उदात्त वीर-भावना से ओतप्रोत हैं। इनमें भूषण ने तत्कालीन जननायक महाराज शिवाजी और छत्रसाल के शौर्य एवं पराक्रम का अत्यंत सजीव एवं मार्मिक वर्णन किया है। इन दोनों राष्ट्रनायकों के सुयश एवं कीर्ति गौरव के वर्णन में कवि भूषण की उदात्त वीर भावना व्यक्त हुई है। भूषण ने तत्कालीन समाज के सम्मुख शारीरिक शौर्य, युध्द-पराक्रम, चारित्रिक उच्चता तथा व्यवहार कुशलता का आदर्श प्रस्तुत किया है। भूषण ने इन दो वीरों के शौर्य एवं पराक्रम का वर्णन करके तत्कालीन समाज की प्रसुप्त वीर भावना को जाग्रत किया है। भूषण की इस वीर भावना में आदर्श नायक के गुण विद्यमान हैं, और आदर्श वीर के भाव विद्यमान हैं और आदर्श राष्ट्र पुरुष के कर्तव्य भी विद्यमान है। भूषण का वीरकाव्य इतिहास और कल्पना से संयुक्त होते हुए भी यथार्थ की ठोस नींव पर स्थित है। भूषण का काव्य भारत की संस्कृति, भारत की वीरता तथा भारत की राष्ट्रीयता का दिग्दर्शन है।

## संदर्भ सूची


| संदर्भ क्र. | ग्रंथ का नाम | लेखक | पृष्ठ क्र. | प्रकाशक एवं प्रकाशन काल संस्करण |
|---|---|---|---|---|
| १ | वीरकाव्य | उदय नारायण तिवारी | २७६ | भारती भंडार,लीडर प्रेस इलाहाबाद । द्वितिय संस्करण सं.२०१२ वि. |
| २ | वीरकाव्य | उदय नारायण तिवारी | २७९ | भारती भंडार,लीडर प्रेस इलाहाबाद । द्वितिय संस्करण सं.२०१२ वि. |
| ३ | भूषण (साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन ) | डॉ.भगवानदास तिवारी | २७ | साहित्य भवन(प्रा.)लि. इलाहाबाद-२ । प्रथम संस्करण १४ नवंबर १९७२ |
| ४ | वीरकाव्य | उदयनारायण तिवारी | २७५ | भारती भंडार,इलाहाबाद द्वितिय सं.,सं.२०१२ वि. |
| ५ | भूषण:(साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन ) | डॉ.भगवानदास तिवारी | ३२ | साहित्य भवन(प्रा.)लि., इलाहाबाद । प्रथम संस्करण १४ नवंबर १९७२ |
| ६ | शिवा-बावनी | आ.विश्वनाथ प्रसाद मिश्र | ६ | संजय बुक सेंटर ,के.३८, ६ गोलघर,वाराणसी-२१ छट्टा संस्करण १९८७ |
| ७ | भूषण:(सा.एवं ऐ.अनुशीलन ) | डॉ.भगवानदास तिवारी | ३७ | साहित्य भवन(प्रा.)लि., इलाहाबाद २,प्रथम संस्करण १४ नवंबर १९७२ |

| संदर्भ क्र. | ग्रंथ का नाम | लेखक | पृष्ठ क्र. | प्रकाशक एवं प्रकाशन काल संस्करण |
|---|---|---|---|---|
| ८ | शिवा-बावनी | श्री देवचंद विशारद | ५ | हिंदी भवन,जालंधर,और इलाहाबाद । १९७९ |
| ९ | भूषण: (सा.एवं ऐ., अनुशीलन ) | डॉ.भगवानदास तिवारी | ३८ | साहित्य भवन(प्रा.)लि., इलाहाबाद-२,प्रथम संस्करण १४ नवंबर १९७२ |
| १० | — वही- | -वही- | | -वही- |
| ११ | शिवा-बावनी | श्री देवचंद्र विशारद | ५ | हिंदी भवन,जालंधर और इलाहाबाद १९७९ |
| १२ | संक्षिप्त भूषण | डॉ.भगवानदास तिवारी | २१ | साहित्य भवन(प्रा.)लि., इलाहाबाद-२,द्वितीय संस्करण, १९८० |
| १३ | भूषण: (सा.एवं.ऐ. अनुशीलन ) | डॉ.भगवानदास तिवारी | ६२ | साहित्य भवन(प्रा.)लि., इलाहाबाद ।प्रथम संस्करण नवंबर १९७२ |
| १४ | शिवा-बावनी | आ.विश्वनाथ प्रसाद | ११ | संजय बुक सेंटर, के.३८।६, गोलघर,वाराणसी-२२१००१ |
| १५ | भूषण(साहित्य एवं ऐतिहासिक अनुशीलन ) | डॉ.भगवानदास तिवारी | ६३ | साहित्य भवन(प्रा.),लि., इलाहाबाद । प्रथम संस्करण १४ नवंम्र १९७२ |
| १६ | --वही-- | -वही- | | -वही- |

| संदर्भ क्र | ग्रंथ का नाम | लेखक | पृष्ठ क्र. | प्रकाशक एवं प्रकाशन काल संस्करण |
|---|---|---|---|---|
| १७ | शिवा-बावनी | आ.विश्वनाथ प्रसाद मिश्र | १२ | संजय बुक सेंटर के.३८।६, गोलघर, वाराणसी २२१००१ छटा संस्करण १९८७ |
| १८ | शिवा-बावनी | श्री देवचंद विशारद | १८ | हिंदी भवन, जालंदर और इलाहाबाद। १९६९ |
| १९ | भूषण: (साहित्य एवं ऐतिहासिक अनुशीलन) | डॉ.भगवानदास तिवारी | ६९ | साहित्य भवन(प्रा.)लि., इलाहाबाद-३, प्रथमसंस्करण १४ नवंबर १९७२ |